ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 10

विद्रोही और राज

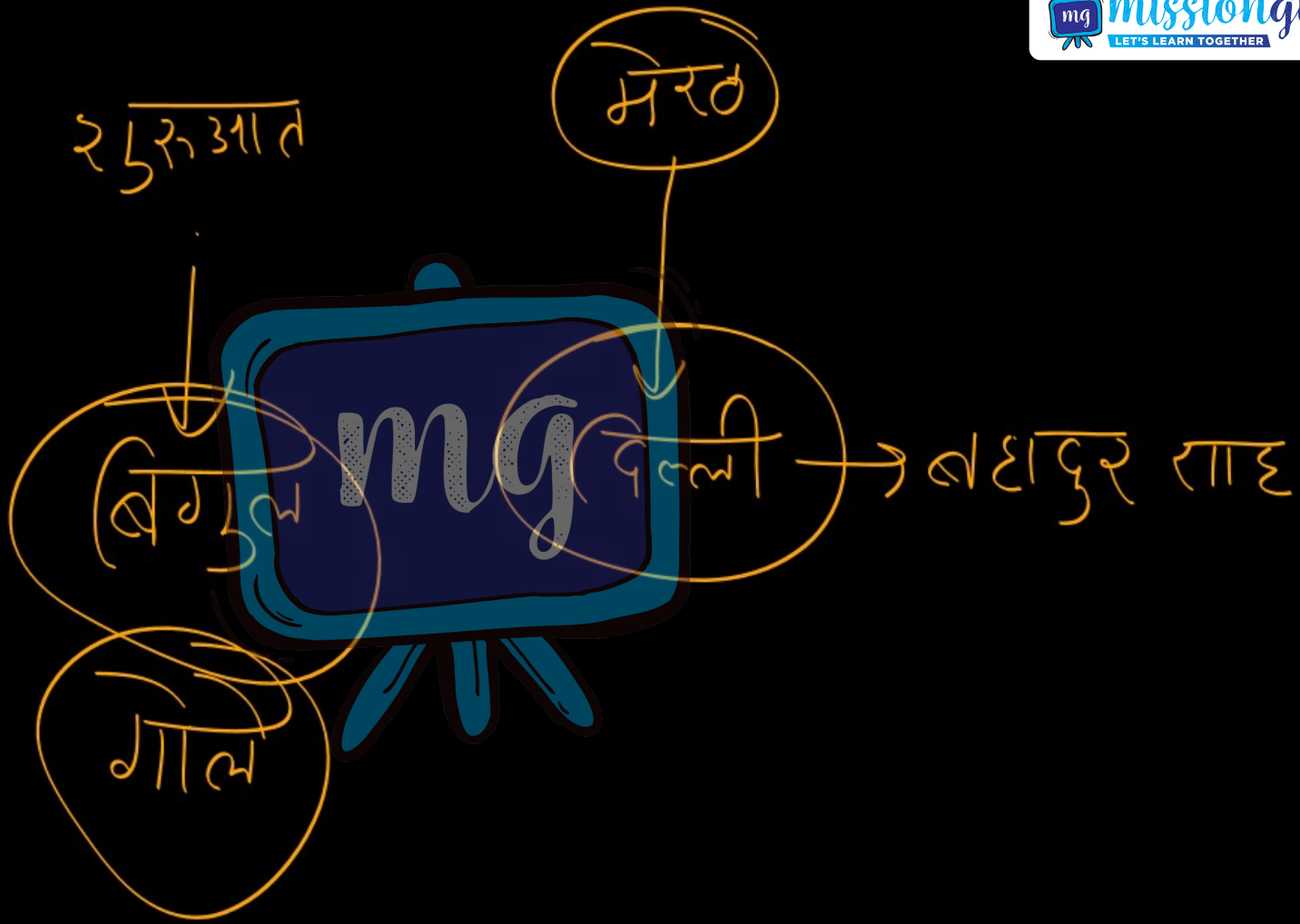
भाग - 2

प्रीतेश जोशी


विद्रोही
और
राज
सैनिक
ब्रिटिश
शासन
1857
राजनीतिक
आर्थिक
समाज
धर्म
ल

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Q. 1857 - विद्रोह की शुरुआत किस प्रकार हुई ?

- विद्रोह में आम लोगों के भी शामिल हो जाने के साथ साथ विद्रोह का दायरा फैल गया।
- साहूकार और अमीर भी विद्रोहियों के गुस्से का शिकार बनने लगे।

ब्रिटिश शासन ताश के किले की तरह बिखर गया।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उदाहरण :-

7वी अवध इर्रेग्यूलर इनफैंटरी (कारतूस)

"हमनें अपने धर्म की रक्षा के लिए फैसले लिए हैं, और 48 नेटिव इंफैंटरी के हुक्म का इंतजार है।"

संचार के माध्यम

- विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच अच्छा संचार बना हुआ था।
- रात में सिपाहियों की पंचायतें जुड़ती थी और उनमें सामूहिक रूप से फैसले लिये जाते थे।
- ये योजनाएँ कैसे बनायी गयी?
- योजनाकार कौन थे?
- मौजूदा दस्तावेजों के आधार पर इन सवालों के सीधे सीधे जवाब देना कठिन है।

- संभवतया इस विद्रोह की योजना लंदन में बनायी गयी थी।
  1. अजीमुल्ला खान – नाना साहब के सलाहकार
  2. रंगो जी बापू – सतारा के राजा के सलाहकार
- क्रान्ति का प्रतीक – कमल का फूल और रोटी
- प्रारम्भ करने की तिथि – 31 मई 1857

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिस्टन और तहसीलदार

विद्रोह और सैनिक अवज्ञा के संदर्भ में सीतापुर के देसी ईसाई पुलिस इंसपेक्टर फ्रांस्वाँ सिस्टन का अनुभव हमें बहुत कुछ बताता है। वह मजिस्ट्रेट के पास शिष्टाचारवश मिलने सहारनपुर गया हुआ था। सिस्टन हिंदुस्तानी कपड़े पहने था और आलथी-पालथी मारकर बैठा था। इसी बीच बिजनौर का एक मुस्लिम तहसीलदार कमरे में दाखिल हुआ। जब उसे पता चला कि सिस्टन अवध में तैनात है तो उसने पूछा, "क्या ख़बर है अवध की? काम कैसा चल रहा है?" सिस्टन ने कहा, "अगर हमें अवध में काम मिलता है तो जनाब-ए-आली को भी पता चल जाएगा।" इस पर तहसीलदार ने कहा, "भरोसा रखो, इस बार हम कामयाब होंगे। मामला काबिल हाथों में है।" बाद में पता चला कि यह तहसीलदार बिजनौर के विद्रोहियों का सबसे बड़ा नेता था।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पूर्व राजा
जमींदार



रानी लक्ष्मी बाई

नेता और अनुयायी :-

- अंग्रेजों से लौहा लेने के लिए नेतृत्व और संगठन जरूरी था।
- विद्रोहियों ने ऐसे लोगों की शरण ली जो अंग्रेजों से पहले नेताओं की भूमिका निभाते थे। जिन्हें अंग्रेजों ने उखाड़ फेंका था।

जैसे – मेरठ के सिपाहियों ने दिल्ली पहुंच कर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को नेतृत्व स्वीकार करने के लिए मना लिया।

ipca
A dose of life

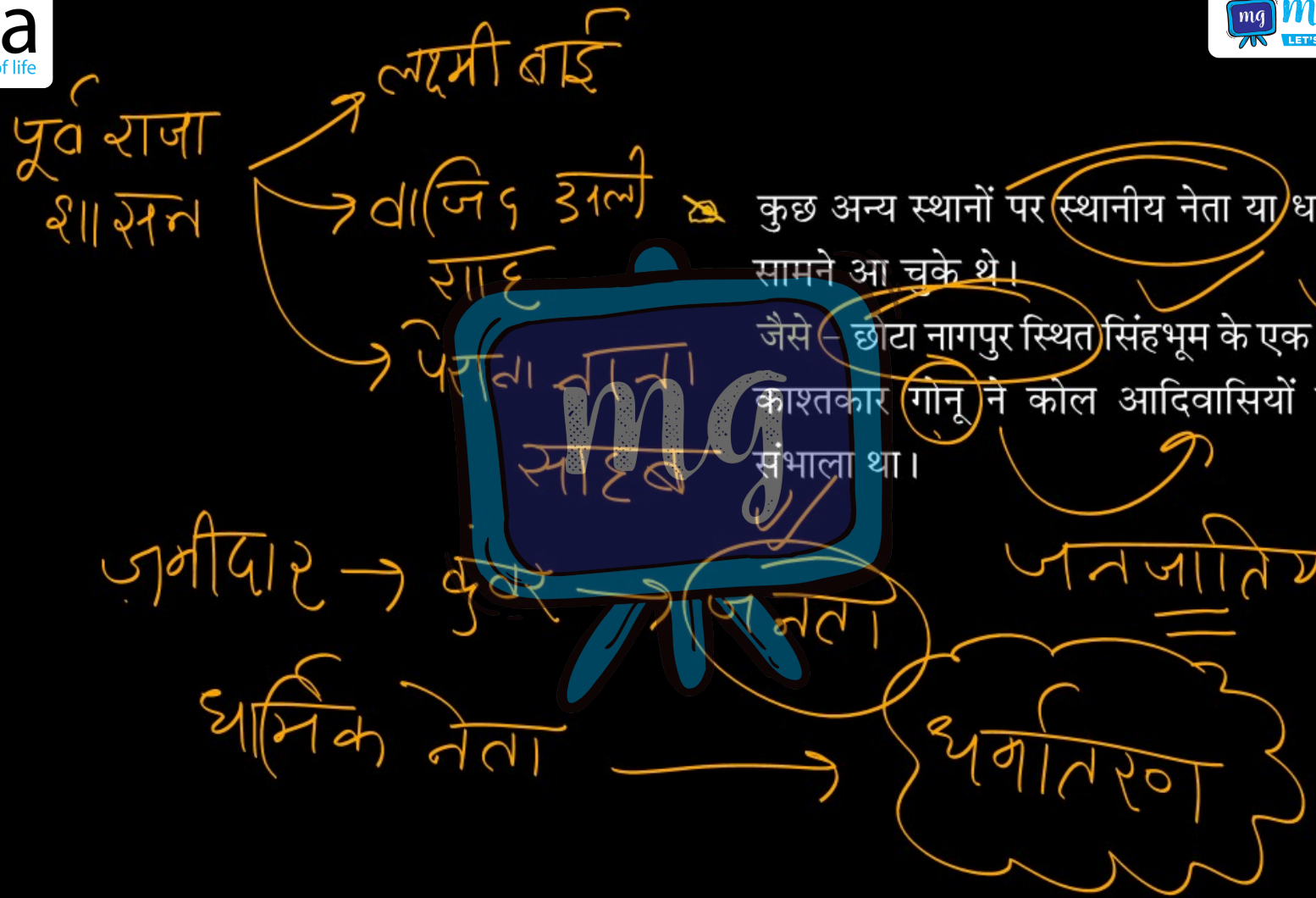
mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कानपुर में पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहब को नेता बनाया।
- झाँसी – रानी लक्ष्मीबाई
- अवध (लखनऊ) – नवाब वाजिद अली शाह के पुत्र बिरजिस कद्र और बेगम हजरत महल
- आरा (बिहार) – जमींदार कुंवर सिंह
- इन विस्थापित शासकों में से अधिकांश स्थानीय लोगों के दबाव के कारण और कुछ अपने स्वयं के उत्साह के कारण विद्रोह में शामिल हुए थे।

ipca
A dose of life

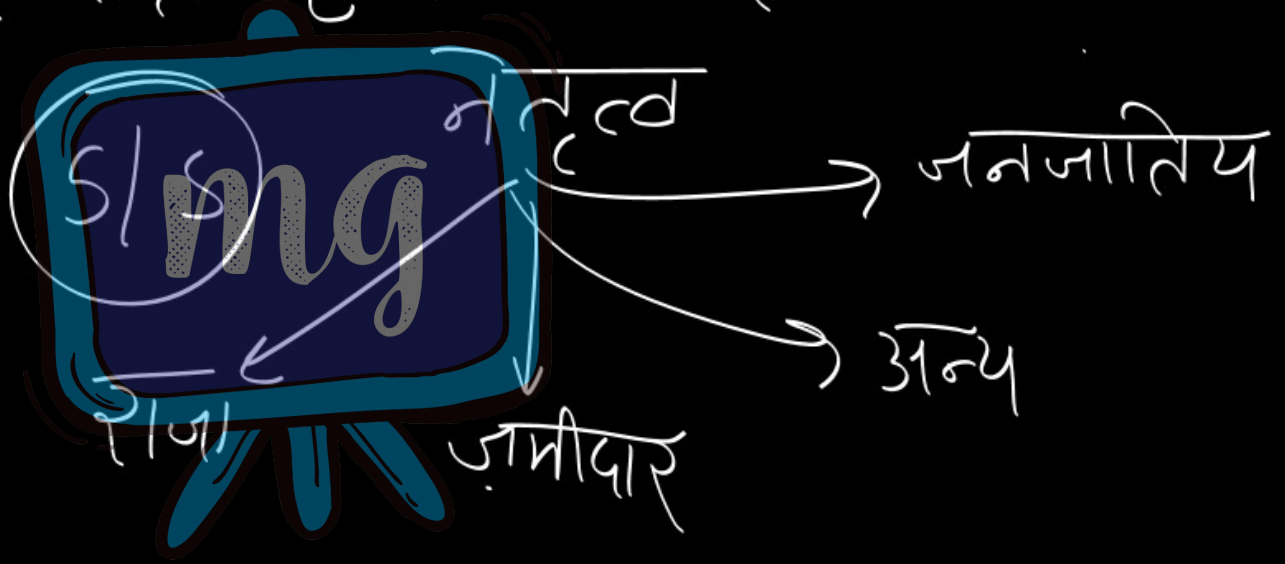
mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कुछ अन्य स्थानों पर स्थानीय नेता या धार्मिक नेता सामने आ चुके थे।

जैसे – छोटा नागपुर स्थित सिंहभूम के एक आदिवासी काश्तकार गोनू ने कोल आदिवासियों का नेतृत्व संभाला था।

Q. 1857 के विद्रोह में हमें नेतृत्व किस प्रकार देखने को मिलता है?



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1857 के दो विद्रोही

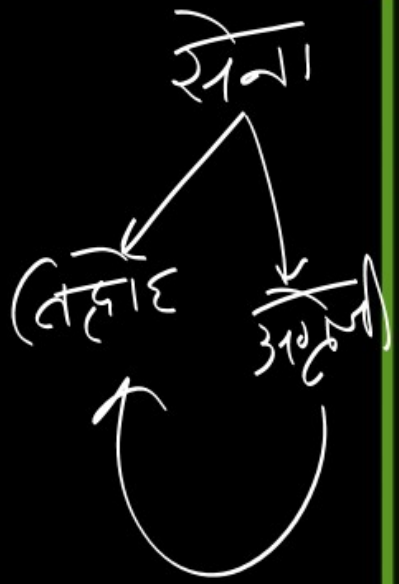
शाह मल

शाह मल उत्तर प्रदेश के बड़ौत परगना के एक बड़े गाँव के रहने वाले थे। वह एक जाट कुटुम्ब से संबंध रखते थे जो चौरासी देस (चौरासी गाँव) में फैला हुआ था। इस इलाके की ज़मीन सिंचाई की सुविधाओं से लैस और उपजाऊ थी। यहाँ कि मिट्टी काली नम थी। बहुत सारे ग्रामीण संपन्न थे और लोग ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था को दमनकारी मानते थे : लगान की दर ज़्यादा और वसूली सख़्त थी। नतीजा यह था कि किसानों की ज़मीन बाहरी लोगों के हाथ में जा रही थी। इलाक़े में आने वाले व्यापारी और महाजन ज़मीन पर क़ब्ज़ा करते जा रहे थे।

शाह मल ने चौरासी देस के मुखियाओं और काश्तकारों को संगठित किया। इसके लिए उन्होंने रात के साए में गाँव-गाँव जाकर बात की और लोगों को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विद्रोह के लिए तैयार किया। बहुत सारे दूसरे स्थानों की तरह यहाँ भी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आंदोलन एक व्यापक विद्रोह में तब्दील हो गया। अब विदेशी उत्पीड़न और अन्याय के तमाम चिह्नों के ख़िलाफ़ होने लगा। किसान अपने खेत छोड़कर निकल पड़े और महाजनों व व्यापारियों के घर-बार लूटने लगे। बेदख़ल भूस्वामियों ने छिन चुकी ज़मीनों पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। शाह मल के आदमियों ने सरकारी इमारतों पर हमला किया, नदी का पुल ध्वस्त कर दिया और पक्की सड़कों को खोद डाला। इसकी एक वजह यह थी कि वे सरकारी फ़ौजों का रास्ता रोकना चाहते थे। दूसरी वजह यह थी कि पुलों और सड़कों को ब्रिटिश शासन का प्रतीक माना जाता था। उन्होंने दिल्ली में विद्रोह करने वाले सिपाहियों को रसद पहुँचाई और ब्रिटिश हेडक्वार्टर व मेरठ के बीच तमाम सरकारी संचार बंद कर दिया। स्थानीय स्तर पर राजा कहलाने वाले शाह मल ने एक अंग्रेज़ अफ़सर के बंगले में डेरा डाला, उसे "न्याय भवन" का नाम दिया और वहीं से झगड़ों और विवादों का फ़ैसला करने लगे। उन्होंने गुप्तचरी का भी हैरतअंगेज़ नेटवर्क स्थापित कर लिया था। कुछ समय के लिए लोगों को लगा कि फ़िरंगी राज ख़त्म हो चुका है और उनका राज आ गया है। जुलाई 1857 में शाह मल को युद्ध में मार दिया गया।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

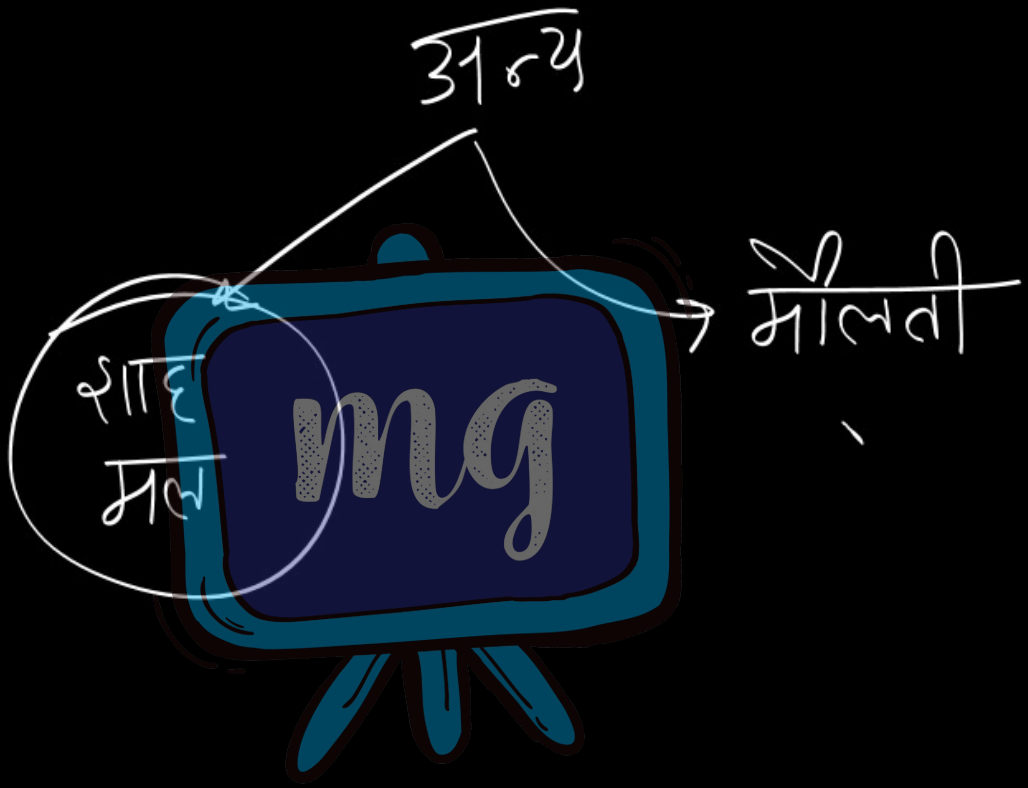


मौलवी अहमदुल्ला शाह

मौलवी अहमदुल्ला शाह 1857 के विद्रोह में अहम भूमिका निभाने वाले बहुत सारे मौलवियों मे से एक थे। हैदराबाद में शिक्षित शाह काफ़ी कम उम्र में ही उपदेशक बन गए थे। 1856 में उन्हें अंग्रेज़ों के खिलाफ़ जिहाद का प्रचार करते और लोगों को विद्रोह के लिए तैयार करते हुए गाँव-गाँव जाते देखा गया था। वे एक पालकी में बैठकर चलते थे। पालकी के आगे-आगे ढोल और पीछे उनके समर्थक होते थे। इसीलिए उन्हें लोग-बाग डंका शाह कहने लगे थे। ब्रिटिश अफ़सर इस बात से परेशान थे कि मौलवी के साथ हज़ारों लोग जुट रहे थे और बहुत सारे मुसलमान उन्हें पैगम्बर मानने लगे थे और समझते थे कि वह इस्लाम के आदर्शों से ओतप्रोत हैं। जब 1856 में वे लखनऊ पहुँचे तो पुलिस ने उन्हें शहर में उपदेश देने से रोक दिया। 1857 में उन्हें फ़ैज़ाबाद जेल में बंद कर दिया गया। रिहा होने पर उन्हें 22वीं नेटिव इन्फेंट्री के विद्रोहियों ने अपना नेता चुन लिया। उन्होंने चिनहाट के विख्यात संघर्ष में हिस्सा लिया जिसमें हेनरी लॉरेंस की अगुवाई वाली टुकड़ियों को मुँह की खानी पड़ी। मौलवी साहब को उनकी बहादुरी और ताकत के लिए जाना जाता था। बहुत सारे लोग मानते थे कि उनको कोई नहीं हरा सकता; उनके पास जादुई शक्तियाँ हैं और अंग्रेज़ उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकते। काफ़ी हद तक इसी विश्वास के कारण उन्हें लोगों में इतना अधिकार प्राप्त था।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



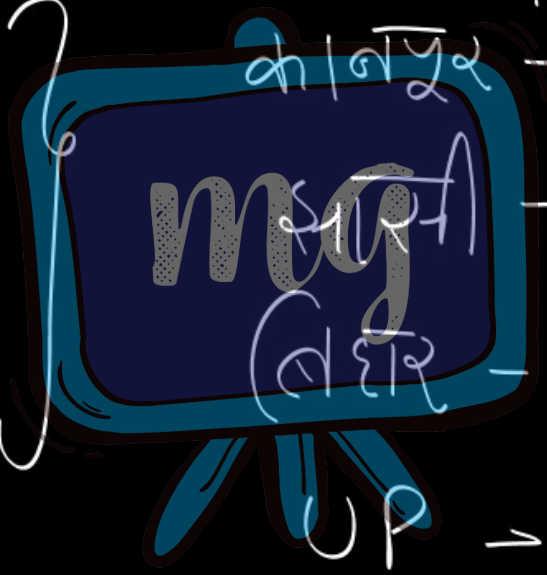
ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नेता

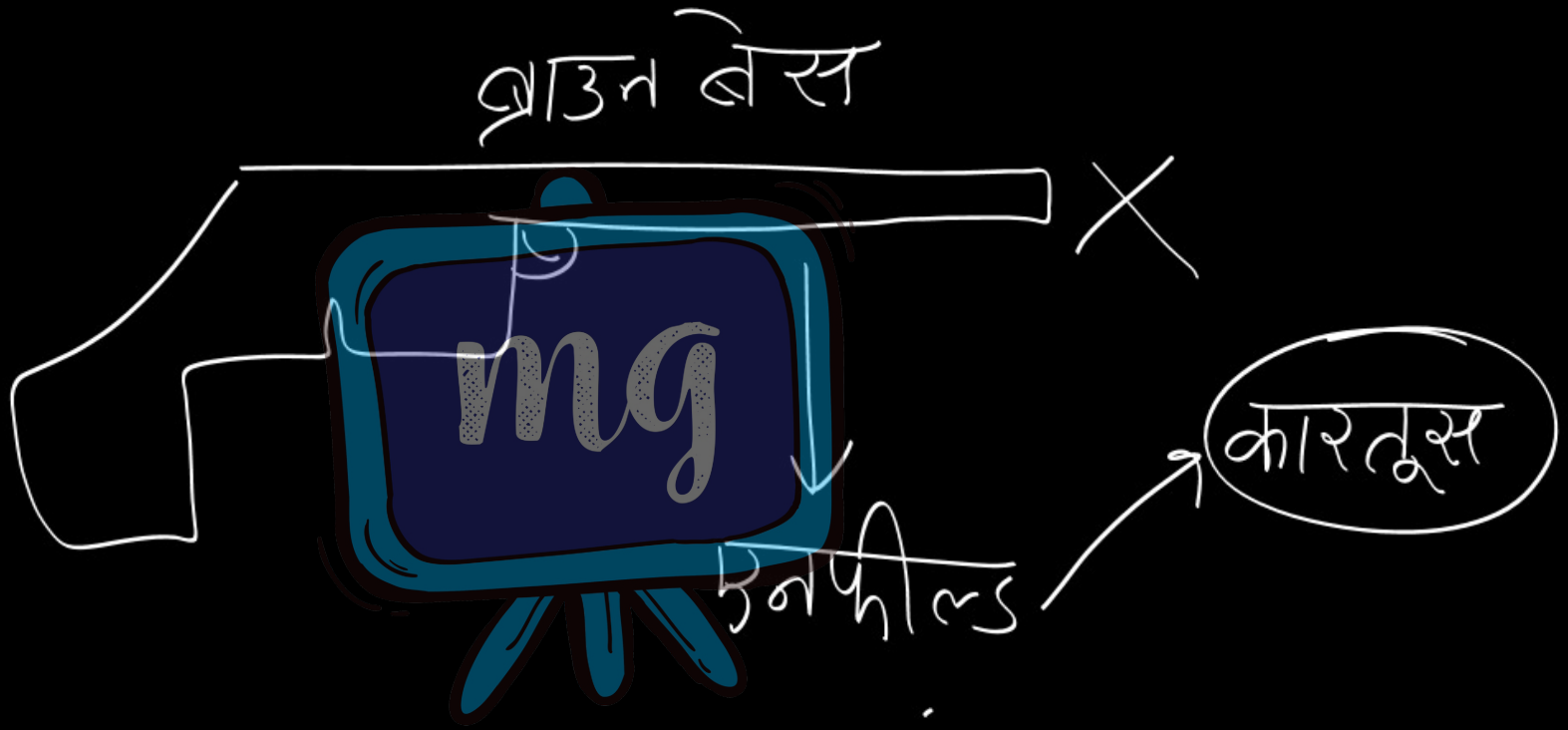
→ निजी
→ जनता
→ मातृभूमि

दिल्ली → ज़फ़र
लखनऊ → बेगम हजरत कारि
कानपुर – नाना साहेब
झांसी – रानी लक्ष्मी बाई
बिहार – कुंवर सिंह
UP → शाह मल
मौलवी अहमदुल्ला



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अफवाहें और भविष्यवाणियाँ –

कई तरह की अफवाहों और भविष्यवाणियों के जरिए लोगों को उठ खड़ा होने के लिए उकसाया जा रहा था।

जैसे :-

1. गाय व सुअर की चर्बी का लेप लगे हुए कारतूस।
2. अंग्रेजों ने बाजार में मिलने वाले आटे में गाय और सुअर की हड्डियों का चूरा मिलवा दिया।
3. अंग्रेज हिंदुस्तानियों को ईसाई बनाना चाहते हैं।

4. भविष्यवाणी : प्लासी के युद्ध के 100 साल पूरे होते ही 23 जून 1857 को अंग्रेजी राज खत्म हो जायेगा।

इन अफवाहों और भविष्यवाणियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण प्रदान किये।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

